



सा. अका. / 100

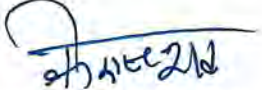
10 फरवरी 2020

कृष्ण बलदेव वैद को साहित्य अकादेमी परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार कृष्ण बलदेव वैद का गुरुवार, दिनांक 6 फरवरी 2020 को 92 साल की उम्र में अमेरिका के न्यूयार्क में निधन हो गया। हिंदी के आधुनिक गद्य-साहित्य में कृष्ण बलदेव वैद को डायरी, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं में एक खास शैली के मौलिक आविष्कारक रचनाकार के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। अनुवाद कर्म में उनका सार्थक हस्तक्षेप रहा। कृष्ण बलदेव वैद ने अपने लेखन में मानव जीवन के नाटकीय संदर्भों को कहन की नई शैली में दर्ज किया। उन्होंने सदा नए से नए और मौलिक-भाषायी प्रयोग किए जो पाठकों को 'चमत्कृत' करने के अलावा हिंदी के आधुनिक-लेखन की दृष्टि से विशेष अर्थपूर्ण हैं। उनके साहित्य में साठ के दशक की चिंताएँ गहरी होकर उभरी हैं।

27 जुलाई, 1927 पंजाब के दिंगा में जन्मे कृष्ण बलदेव वैद ने अपनी लेखनी से कई पीढ़ियों को प्रभावित किया। 'उसका बचपन', 'बिमल उर्फ जाँ तो जाँ कहाँ', 'तसरीन', 'दूसरा न कोई', 'दर्द ला दवा', 'गुज़रा हुआ ज़माना', 'काला कोलाज', 'नर नारी', 'माया लोक', 'एक नौकरानी की डायरी' आदि उपन्यासों से उन्होंने हिंदी साहित्य में अपनी एक अलग ही पहचान बनाई। उनके कहानी-संग्रहों - 'बीच का दरवाज़ा', 'मेरा दुश्मन', 'दूसरे किनारे से', 'लापता', 'उसके बयान', 'पिता की परछाइयाँ', 'रात की सैर', 'बोधिसत्व की बीवी', बदचलन बीवियों का द्वीप', 'वह और मैं' तथा नाटकों - 'भूख आग है', 'हमारी बुढ़िया', 'सवाल और स्वप्न', 'परिवार अखाड़ा' आदि को पाठकों का अपार स्नेह प्राप्त हुआ। 'शिकस्त की आवाज़' शीर्षक से उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखी। कृष्ण बलदेव वैद ने अपने वृहत् साहित्य से भारतीय साहित्य में श्रीवृद्धि की है।

साहित्य अकादेमी कृष्ण बलदेव वैद के निधन से अत्यंत दुखी है। उनका जाने से साहित्य जगत् को अपूरणीय क्षति हुई है। अकादेमी परिवार कृष्ण बलदेव वैद के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि निवेदित करती है।


(के. श्रीनिवासराव)